Aaryoddeshya-Ratna Maalaa

Author: Swami Dayanand Saraswati
Translator: Darshanand. Ramdass

Aaryoddeshya Ratna Maalaa-is a mini booklet with 100 definitions outlining the goals, beliefs, and guidelines of the Aryas, pious minded-people.

ईश्वर-- जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही है। जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा एक अद्वितीय सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि और अनन्त आदि सत्यगुण वाला है। और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है। जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सर्वजीवों को पाप, पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुँचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं॥ १

1. Eeshwar—is that being whose qualities, actions, disposition, and nature are truthful.
True Qualities: That being is a conscious entity, unparalleled, omnipotent, formless, all pervasive, without a beginning, and endless.
True Disposition/Nature: indestructible, knowledgeable, blissful, absolutely pure, just, compassionate, and birthless.
True Actions: giving motion to matter in its dormant state, maintaining balance and disintegrating manifested matter to its original state of Sattwa, Rajas, and Tamas. Furthermore, Eeshwar dispenses justice by rewarding all souls with the consequences of their pious and non-pious actions.

Question: How can we communicate with that Divine Being?
Answer: By Stuti, Praarthanaa, and Upaasanaa.

स्तुति--जो ईश्वर वा किसी दूसरे पदार्थ के गुणज्ञान, कथन, श्रवण और सत्यभाषण करना है, वह स्तुति कहाती है॥ २१

Stuti-Glorification is to acknowledge and mention truthfully the qualities of Eeshwar or another thing or person.

स्तुति का फल--जो गुण, ज्ञान आदि के करने से गुण वाले पदार्थों में प्रीति होती है, यह स्तुति का फल कहाता है॥ २२

Benefits of Stuti—one develops love and appreciation when one acknowledges the quality and knowledge of something.

प्रार्थना--अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिये परमेश्वर वा किसी सामर्थ्य वाले मनुष्य का सहाय लेने को प्रार्थना कहते हैं॥ २४

Prayer—is asking the Divine or any capable person for help after striving one's utmost best for a particular goal.

प्रार्थना का फल-- अभिमान नाश, आत्मा में आर्द्रता, गुण ग्रहण में पुरुषार्थ, और अत्यन्त प्रीति का होना प्रार्थना का फल है॥ २५

Benefits of Prayer: Prayer destroys arrogance, develops deep devotion, inspires effort to improve one's self, and promotes love for the Divine.

उपासना--जिस करके ईश्वर ही के आनन्द स्वरूप में अपने आत्मा को मग्न करना होता है, उसको उपासना कहते हैं॥ २६

Upaasanaa—Communion is immersing one's being in the bliss of Eeshwar.

उपासना का फल--जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूट कर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिये परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, और उपासना अवश्य करनी चाहिये। सत्यार्थ प्रकाश --७

Benefits of Communion: as a person feeling cold experiences warmth in the presence of a fire, likewise, nearness to The Lord frees an individual of all blemishes and increases tolerance for pain. Moreover, this bond enables the individual soul's qualities, actions, and disposition to become pure and divine like.

Two types of Upaasanaa:

निर्गुणोपासना--शब्द, स्पर्श, और रूप, रस, गन्ध, संयोग-वियोग, हलका, भारी, अविद्या, जन्म, मरण और दुःख आदि गुणों से रहित परमात्मा को जानकर, जो उसकी उपासना करनी है, उसको निर्गुणोपासना कहते हैं॥ २७

Nirgunopaasanaa: Upaasanaa without qualities: Communing with the divine with the knowledge that Eeshwar is devoid of mechanisms to experience sound, touch, sight, taste, smell, union with matter, separation from matter, light, heavy, ignorant, taking birth, dying, and free from pain is termed Nirgunopaasanaa.

सगुणोपासना--जिसको सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, शुद्ध, नित्य, आनन्द, सर्वव्यापक, एक, सनातन, सर्वकर्त्ता, सर्वाधार, सर्वस्वामी, सर्वनियन्ता, सर्वान्तर्यामी, मङ्गलमय, सर्वानन्दप्रद, सर्वपिता, सब जगत् का रचनेवाला, न्यायकारी, दयालु, आदि सत्य गुणों से युक्त जानके जो ईश्वर की उपासना करनी है, सो सगुणोपासना कहाती है॥ २८

Sagunopaasanaa: Upaasanaa with Qualities: Communing with Eeshwar who is omniscient, omnipotent, absolutely pure, eternal, blissful, all pervading, One Supreme Being, ever existent, Lord of all, foundation of all, master of all, manager of the cosmos, indweller of all, benevolent, giver of bliss, father of all, creator of the world, just, compassionate, and possess other truthful qualities is termed Sagunopaasanaa.